



Boy Kunal

20 Mar 2026

10:45 AM

Vashi

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121937001

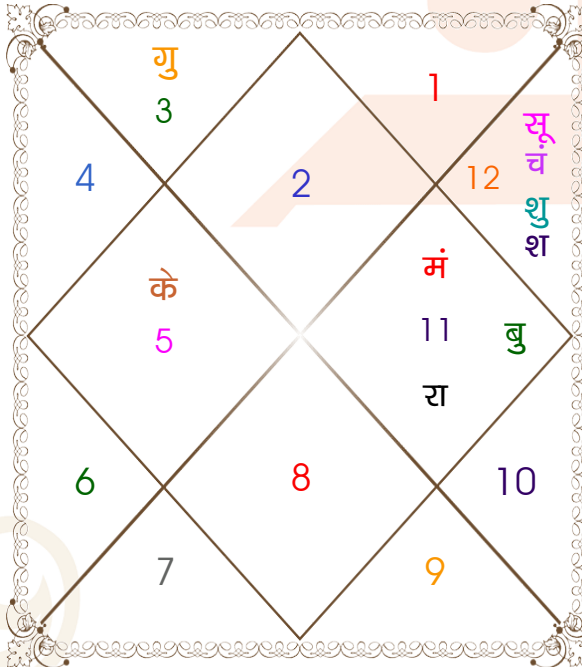
तिथि 20/03/2026 समय 10:45:00 वार शुक्रवार स्थान Vashi चित्रपक्षीय अयनांश : 24:13:30
अक्षांश 19:04:00 उत्तर रेखांश 72:59:00 पूर्व मध्य रेखांश 82:30:00 पूर्व स्थानिक संस्कार -00:38:04 घंटे

पंचांग	अवकहड़ा चक्र
साम्पातिक काल : 21:57:58 घं	गण _____: देव
वेलान्तर _____: 00:07:30 घं	योनि _____: गज
सूर्योदय _____: 06:42:38 घं	नाड़ी _____: अन्य
सूर्यास्त _____: 18:48:49 घं	वर्ण _____: विप्र
चैत्रादि संवत _____: 2083	वश्य _____: जलचर
शक संवत _____: 1948	वर्ग _____: सर्प
मास _____: चैत्र	सुँजा _____: पूर्व
पक्ष _____: शुक्ल	हंसक _____: जल
तिथि _____: 2	जन्म नामाक्षर _____: दो-दौलत
नक्षत्र _____: रेवती	पाया(रा.-न.) _____: स्वर्ण-स्वर्ण
योग _____: ब्रह्म	होरा _____: गुरु
करण _____: बालव	चौघड़िया _____: अमृत

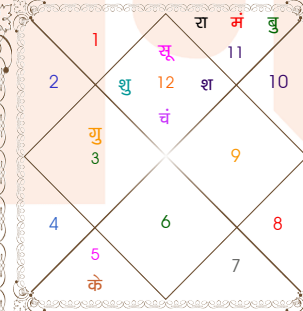
विंशोत्तरी	योगिनी
बुध 11वर्ष 11मा 14दि	उल्का 4वर्ष 2मा 19दि
बुध	उल्का
20/03/2026	20/03/2026
04/03/2038	08/06/2030
00/00/0000	20/03/2026
20/03/2026	सिद्धा 08/08/2026
शुक्र 29/05/2027	संकटा 08/12/2027
सूर्य 03/04/2028	मंगला 07/02/2028
चन्द्र 02/09/2029	पिंगला 08/06/2028
मंगल 31/08/2030	धान्या 07/12/2028
राहु 19/03/2033	भामरी 08/08/2029
गुरु 25/06/2035	भद्रिका 08/06/2030
शनि 04/03/2038	

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			14:54:57	वृष	रोहिणी	2	चंद्र	गुरु	---	0:00			
सूर्य			05:22:52	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	मित्र राशि	1.86	कलत्र	पितृ	अतिमित्र
चंद्र			20:37:20	मीन	रेवती	2	बुध	शुक्र	सम राशि	1.21	भातृ	मातृ	जन्म
मंगल	अ		19:39:09	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	मंगल	सम राशि	1.18	मातृ	भातृ	वध
बुध	व		14:17:00	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	बुध	सम राशि	1.18	पुत्र	ज्ञाति	वध
गुरु			20:59:45	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.34	अमात्य	धन	मित्र
शुक्र			22:52:09	मीन	रेवती	2	बुध	चंद्र	उच्च राशि	1.26	आत्मा	कलत्र	जन्म
शनि	अ		09:51:11	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	शुक्र	सम राशि	0.96	ज्ञाति	आयु	अतिमित्र
राहु	व		14:42:12	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि	---		ज्ञान	वध
केतु	व		14:42:12	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि	---		मोक्ष	विपत

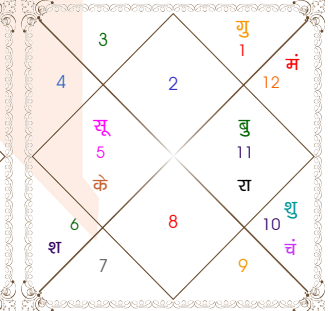
लग्न-चलित



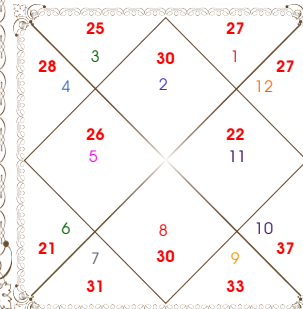
चन्द्र कुंडली



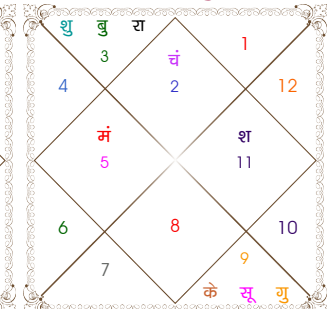
नवमांश कुंडली



सर्वाष्टकवर्ग



दशमांश कुंडली



नक्षत्रफल

आप रेवती नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि मीन तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण ब्राह्मण, गण देव, योनि गज, नाड़ी अन्त्य तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के द्वितीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "दो" या "दौ" अक्षर से होगा। यथा- दौलत सिंह आदि

आप में स्वाभाविक रूप से सज्जनता का भाव विद्यमान रहेगा एवं समाज में दूसरे लोगों से आपके प्रिय एवं मधुर संबंध रहेंगे। धन वैभव आदि से आप हमेशा युक्त रहेंगे एवं सुख पूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। इन्द्रियों पर आप पूर्ण नियंत्रण रखने में सक्षम रहेंगे तथा संयमपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे। आप नैसर्गिक रूप से ईमानदार रहेंगे एवं अपने इसी गुण से व्यापारादि में धनार्जन करेंगे तथा किसी भी अनैतिक कार्य से धन लाभ प्राप्त नहीं करना चाहेंगे। इसके अतिरिक्त आप कुशाग्र बुद्धि के पुरुष होंगे एवं बुद्धिमता से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे।

**चारुशीलविभवो जितेन्द्रियः सद्नानुभवनैकमानसः।
मानवो ननु भवेन्महामती रेवती भवति यस्य जन्मभम्।।
जातकाभरणम्**

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न जातक सुन्दर स्वभाव वाला, ऐश्वर्य युक्त, जितेन्द्रिय, नेक नीयत से द्रव्य लाभ करने वाला तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है।

आप शरीर के सुन्दर सर्वाङ्गों से परिपूर्ण रहेंगे। आप समाज में सभी वर्गों के मध्य प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप शौर्य गुणों से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं पराकमी तथा साहसिक कार्यों को सम्पन्न करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगे। आपके इस साहसी स्वभाव से सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप मन से स्वच्छ रहेंगे एवं सबके साथ विश्वास पूर्वक कार्य सम्पन्न करेंगे तथा धोखा किसी के भी साथ नहीं करेंगे। इसके अतिरिक्त धन सम्पत्ति से सुशोभित रहकर समाज में आप एक धनवान पुरुष के रूप में भी यशार्जन करने में सफल रहेंगे।

**सम्पूर्णाङ्गः सुभगः शूरः शुचिरर्थवान्पौष्णे।।
बृहज्जातकम्**

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला जातक शारीरिक अंगों से पूर्ण सम्पन्न, सर्वसमाजप्रिय, रणप्रिय, हृदय से शुद्ध एवं धन से सुसम्पन्न होता है।

आपके सभी कार्य कुशलता पूर्वक सम्पन्न होंगे एवं अन्य सामाजिक जनों से आपका व्यवहार अत्यन्त ही सुशील एवं प्रशंसनीय रहेगा। आप एक विद्वान पुरुष होंगे तथा नाना प्रकार के शास्त्रों का परिश्रम पूर्वक विस्तृत ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम रहेंगे। इससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में नित्य वृद्धि होती रहेगी। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य से भी आप

सुशोभित रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन यापन करेंगे।

**सम्पूर्णाङ्गः शुचिर्दक्षः साधुः शूरो विचक्षणः।
रेवती सम्भवे लोके धनधान्यैरलंकृतः।।
मानसागरी**

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न जातक सब अंगों से पूर्ण, पवित्र, कार्यों में दक्ष, साधु, शूरवीर, पंडित एवं धन धान्यों से सर्वथा अलंकृत रहता है।

काम भावना की प्रवलता से आप यदा कदा व्याकुलता की भी अनुभूति करेंगे। साथ ही आपके जानुभाग में कोई निशान या चिन्ह भी हो सकता है। आप देखने में सुन्दर होंगे तथा सलाह या मंत्रणा आदि के कार्यों में दक्ष रहेंगे। आप सुशील पत्नी एवं गुणवान पुत्रों से युक्त रहेंगे एवं आपके सभी मित्र भी शिक्षित एवं सद्गुणों से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे। आप दृढ विचारों के व्यक्ति होंगे तथा सभी आवश्यक कार्यों को दृढता से सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त स्थिर धन सम्पत्ति से आप सुशोभित रहेंगे एवं प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

**रेवत्या मुरुलाच्छनोपगतनुः कामातुरः सुन्दरो।
मन्त्री पुत्रकलत्रमित्रसहितो जातः स्थिरः श्रीरतः।।
जातकपरिजातः**

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य जाघों में चिन्ह वाला, कामातुर, सुन्दर, मन्त्री या सलाह देने वाला, दृढ, श्रीयुत, स्त्री, पुत्र तथा मित्रों से युक्त होता है।

आप स्वर्ण पाद में उत्पन्न हुए हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने के कारण जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। इस से उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा प्रायः धनाभाव से भी दुःखी रहता है। साथ ही जीवन में सुख संसाधनों से भी हीन रहता है तथा सांसारिक कार्यों में अल्प मात्रा में सफलता प्राप्त होती है जिससे मन में तनाव आदि विद्यमान रहता है। इसके अतिरिक्त जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसे अत्यधिक परिश्रम के द्वारा अल्प सफलता अर्जित होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद अधिकांश शुभ फल ही प्रदान करेगा। अतः आप जीवन में समस्त सुख संसाधनों वैभव ऐश्वर्य एवं धनादि से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में पर्याप्त मात्रा में धनार्जन करके समाज में एक धनाढ्य पुरुष के रूप में प्रख्यात रहेंगे। समाज में आप एक सम्माननीय व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही वाहनादि सुखों से भी आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप सद्गुणों से सर्वथा सम्पन्न रहेंगे। आपकी पत्नी भी सुन्दर सुशील एवं गुणवान होगी तथा आपके सेवकगण भी ईमानदार रहेंगे। साथ ही आप के लाभ मार्ग भी हमेशा प्रशस्त रहेंगे। आप दीर्घायु होंगे एवं शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेंगी। इसके अतिरिक्त पुत्रादि का भी आप पूर्ण रूप से सुख प्राप्त करेंगे।

मीन राशि में उत्पन्न होने के कारण आप सुन्दर आकर्षक शरीर एवं व्यक्तित्व

से युक्त रहेंगे। आपका ललाट विस्तृत एवं नासिका उन्नत होगी। साथ ही आप की कमर भी पतली होगी। शिल्प एवं चित्रकारी में आप निपुण होंगे एवं परिश्रम पूर्वक इस क्षेत्र में सफलता तथा यशार्जन करने में सफल हो सकेंगे। आप शत्रुओं को पराजित करने में सक्षम होंगे तथा वे भी आपसे सर्वदा भयभीत एवं प्रभावित रहेंगे। साथ ही वे आपका विरोध करने में हमेशा असमर्थ रहेंगे। आपको विभिन्न शास्त्रों का भी ज्ञान होगा एवं एक विद्वान के रूप में समाज में सम्मान प्राप्त करेंगे। गीत शास्त्र के प्रति भी आप रुचिशील रहेंगे एवं यत्नपूर्वक इसका भी ज्ञान करने में आप उत्सुक रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा एवं निष्ठा का भाव रहेगा एवं नियम पूर्वक आप धर्माचरण में प्रायः तत्पर रहेंगे स्त्री वर्ग में भी आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा कई लोगों से आपके मधुर एवं मित्रतापूर्ण संबंध रहेंगे। आप हमेशा मधुर एवं प्रियवाणी का उपयोग करेंगे जिससे अन्य सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही जीवन में आवश्यक भौतिक सुखसंसाधनों की भी आपको प्राप्ति होगी जिसका आप उपभोग करने में प्रसन्नता की अनुभूति प्राप्त करेंगे। आप में क्रोध के भाव की अल्पता भी रहेगी एवं राजकीय सेवा में भी आप नियुक्त रहेंगे। आप जमीन के अन्दर से निकाले गए पदार्थों से विशेष रूप से लाभ भी अर्जित करेंगे। स्त्री के आप पूर्ण रूप से नियंत्रण में रहेंगे तथा सभी आवश्यक कार्यों को उसके कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। आपका स्वभाव अच्छा रहेगा तथा सभी सामाजिक लोगों से आपके मधुर संबंध रहेंगे। इसके अतिरिक्त समुद्री जहाज में यात्रा करने या नाव आदि में सैर करने में भी आप की प्रवृत्ति रहेगी एवं इससे आपको प्रसन्नानुभूति प्राप्त होगी। साथ ही दानशीलता के भाव से भी आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में यथाशक्ति इसका अनुपालन करते रहेंगे।

शिल्पोत्पन्नाधिकरोळहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारुदेहो ।

गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी ।।

ईष्टकोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो ।

यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः ।।

सारावली

आपको जल या समुद्र से उत्पन्न पदार्थों तथा मोती शंखादि रत्नों से विशेष लाभ प्राप्त होगा तथा इनसे आप युक्त भी हो सकते हैं। साथ ही जीवन में किसी अन्य व्यक्ति संबंधी या मित्र की धन सम्पत्ति भी आपको प्राप्त हो सकेगी तथा सुख पूर्वक आप उसका उपभोग कर सकेंगे। स्त्रियोचित परिधानों के प्रति आपके मन में विशेष आकर्षण रहेगा। इसके साथ ही आप शारीरिक रूप से मध्यम कद के पुरुष होंगे।

जलपरधनभोक्ता दारवासोळनुरक्तः ।

समरुचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः ।।

अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारुदृष्टिः ।

द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्त्यराशौ ।।

बृहज्जातकम्

आप दिन में कई बार जल पीने की इच्छा प्रकट करेंगे तथा जल को अधिक मात्रा

में उपयोग करेंगे। आपका अपनी पत्नी के ऊपर पूर्ण विश्वास रहेगा तथा उससे हमेशा प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। अतः आपका सांसारिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। आप में विद्वता के गुण भी रहेंगे एवं कृतज्ञता के भाव से भी सर्वथा युक्त रहेंगे तथा अन्य मनुष्यों के द्वारा उपकृत होने पर उनके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करेंगे। इसके साथ ही आप भाग्यबल से युक्त पुरुष होंगे तथा आपके अधिकांश महत्वपूर्ण कार्य भाग्यबल से ही सिद्ध होंगे।

अत्यम्बुपानः समचारुदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता ।

विद्वान्कृतज्ञो लमिभवत्यलमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोऽन्तराशौ । ।

फलदीपिका

आप एक संयमी पुरुष होंगे एवं इन्द्रियों पर पूर्ण रूप से नियंत्रण रखकर जीवन व्यतीत करेंगे इससे आपके लिए अनावश्यक परेशानियां अल्प मात्रा में ही उत्पन्न होंगी। आप के अधिकांश कार्य चतुराई तथा बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे तथा सभी लोग आपके इस गुण से प्रभावित रहेंगे। जल कीड़ा करने में आप अत्यन्त ही आनन्दानुभूति प्राप्त करेंगे तथा इसके लिए नित्य प्रयत्नशील भी रहेंगे। आप का मन सर्वदा शुद्ध रहेगा अतः अन्य लोगों से आप कभी भी धोखा नहीं करेंगे तथा शुद्ध मन से अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगे।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः ।

विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः । ।

जातकाभरणम्

जीवन में आप सामान्यतया उदर पोषण आदि के कार्यों में ही अधिकांश समय व्यतीत करेंगे। साथ ही यदा कदा लाभमार्ग भी अवरुद्ध होंगे। इससे आपको आर्थिक परेशानियों का सामना भी करना पड़ेगा। शारीरिक कान्ति से आप सुशोभित रहेंगे एवं इससे आपके सौन्दर्य आकर्षण में निरन्तर वृद्धि होगी। पिता से आप पूर्ण रूपेण धन सम्पत्ति प्राप्त करेंगे तथा जीवन में सुख पूर्वक उसका उपभोग करेंगे। आप साहसी एवं पराकमी व्यक्ति भी होंगे तथा साहसिक एवं शौर्योचित कार्यों को करने में नित्य तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप सन्तोषी स्वभाव के व्यक्ति होंगे एवं जो कुछ भी उपलब्ध हो उसी में सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोऽप्रशस्तः ।

उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो डध्यः । ।

अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारुकान्तिः ।

पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः ।

तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः । ।

जातकदीपिका

आप में गम्भीरता का भाव नित्य विद्यमान रहेगा तथा वीरता के गुणों से भी आप युक्त रहेंगे। समाज में आप एक गणमान्य तथा प्रधान पुरुष के रूप में श्रद्धेय तथा सम्माननीय समझे जाएंगे। साथ ही आपका स्वभाव कृपणता से भी युक्त रहेगा एवं धन संचय के प्रति आपकी विशेष रुचि रहेगी। आप परिवार तथा कुल में भी प्रिय तथा श्रेष्ठ रहेंगे तथा सभी

परिवारिक जनों से यथा योग्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। सेवा कार्यों में भी आप तत्पर रहेंगे एवं इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। आप शीघ्र गति से गमन करना पसन्द करेंगे। शनैः शनैः चलना आपको उचित नहीं लगेगा। इसके अतिरिक्त आप उत्तम आचरण के व्यक्ति होंगे तथा आपका आचरण अन्य लोगों के लिए प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय रहेगा। इसके साण ही बन्धु जनों के मध्य आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगे।

**गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः ।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः ।।
नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधर्वकुशलः शुभः ।।
मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः ।।
मानसागरी**

इस प्रकार अपने आकर्षक सौन्दर्य एवं विद्वता से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा समाज में पूर्ण आदर तथा सम्मान अर्जित करेंगे।

**मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः ।।
जातक परिजातः**

देवगण में पैदा होने के कारण आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं श्रेष्ठ रहेगी जिससे अन्य लोग आपसे नित्य प्रसन्न रहेंगे। साथ ही आप की बुद्धि सरल रहेगी तथा सब कुछ सादगी से ग्रहण करने की क्षमता से आप सुशोभित रहेंगे। आप थोड़ी मात्रा में शुद्ध एवं सात्विक भोजन करने में रुचिशील रहेंगे एवं इसको प्राप्त करके आत्मिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगे। अन्य लोगों के गुणों का आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा अच्छे बुरे की पहचान करने में नित्य समर्थ रहेंगे तथा स्वयं भी उत्तम विद्वानों द्वारा प्रतिपादित श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न रहेंगे। इसके अतिरिक्त जीवन में सर्वप्रकार के धन ऐश्वर्य एवं वैभव की आपकी पास प्रधानता रहेगी तथा प्रसन्नतापूर्वक आप जीवन व्यतीत करेंगे।

आप देखने में सुन्दर होंगे तथा दानशीलता की भावना से सर्वथा सुशोभित रहेंगे। साथ ही आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करने में नित्य रुचिशील रहेंगे। आप अनावश्यक भौतिकता तथा दिखावे के भी विरुद्ध रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक उच्च कोटि के विद्वान होंगे एवं समाज में एक विद्वान के रूप में आपकी पूर्ण प्रतिष्ठा तथा ख्याति रहेगी।

**सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च ।
जायते सुरगणे ङणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः ।।
जातकाभरणम्**

अर्थात् देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बुद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

गज योनि में जन्म होने के कारण आप उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग के सदैव प्रिय रहेंगे एवं इनसे पूर्ण सहयोग तथा आदर भी प्राप्त करेंगे। इससे आपके अधिकांश महत्वपूर्ण कार्य सुगमता पूर्वक सिद्ध हो जाएंगे। साथ ही शारीरिक बल से भी आप युक्त रहेंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को स्वभुजबल से ही सम्पन्न करेंगे। जीवन में विविध प्रकार के भौतिक सुखों को प्राप्त करने में भी आप सौभाग्यशाली रहेंगे। जीवन में आप किसी उच्चाधिकारी के सहयोगी या स्वयं भी उच्चाधिकारी बन सकते हैं। आप एक उत्साही पुरुष होंगे एवं उत्साह पूर्वक कार्य करने से सामान्यतया सफलता प्राप्त करने में सफल रहेंगे एवं आनन्द पूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

**राजमान्यो बली भोगी भूपस्थान विभूषणः ।
आत्मोत्साही नरो जातः गजयोनौ न संशयः । ।
मानसागरी**

अर्थात् गजयोनि में उत्पन्न जातक राजमान्य, बली, भोगी, राज्यस्थान को सुशोभित करने वाला तथा उत्साही होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में है। अतः माता के आप सदैव प्रिय रहेंगे एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेंगे। जीवन में आपकी उन्नति एवं समृद्धि के लिए सदैव आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उन्हीं के सहयोग से आप अपने आय साधनों की वृद्धि करने में सफल हो सकेंगे। इस प्रकार जीवन के समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आपको नित्य धन लाभ होता रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करना एवं उनकी सेवा करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही स्नेहपूर्ण रहेंगे एवं उनमें मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। इस प्रकार आप परस्पर एक दूसरे के लिए शुभ रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहयोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी तथा पूर्णमासी तिथियां, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों, आश्लेषा नक्षत्र, व्रजयोग तथा विष्टिकरण में कोई भी शुभ कार्य सम्पन्न न करें। अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इसके साथ ही इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य शुभ कार्यों में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा की उपासना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से वृहस्पतिवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही सोना, पीत पुखराज, पीत वस्त्र, पीत चन्दन हल्दी तथा चने की दाल आदि पदार्थों का किसी योग्य पात्र को श्रद्धापूर्वक दान देना चाहिए। इससे आपकी चिन्ताएं दूर होंगी तथा समस्त अशुभ फल दूर होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी एवं सर्वत्र लाभमार्ग प्रशस्त होंगे। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रिक मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी सुयोग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए।

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रो सः वृस्पतये नमः ।
मंत्र- ॐ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः ।